In 1937, an Act was passed in India called the Shariat Act in which it was stated that the law governing Muslims should be as laid down in the Shariat Act. Even a writer like Mulla—he is not a Muslim Mulla—says that the Muslim law is based upon the Koranic principles. Please also don't forget that there is a section of people among the Muslims who say that this is a matter affecting religion, although I do not think it is so.

Let us, in this matter, go forward but slowly wihout creating any explosion of opinion in the country. I am completely one with the hon. Member, Shri Prakash Vir Shastri, that we should make an attempt as laid down in the Constitution to see that polygamy does not continue to exist in our country. I have nothing further to say.

श्री कुंवरलाल गुप्त : क्या किसी मिनिस्टर ने आपको लिखा है कि इस तरह का कानून नहीं बनना चाहिए ।

MR. CHAIRMAN: No question please.

SHRI GOVINDA MENON: Some Muslims have done that.

SHRI KANWAR LAL GUPTA: I say, Ministers.

SHRI GOVINDA MENON: I do not know.

MR. CHAIRMAN: Not without the permission of the Chair. This is very bad.

Now we pass on to the next item.

19.05 hrs.

DISCUSSION *RE* EARTHQUAKES IN WESTERN INDIA AND RELIEF MEASURES TAKEN BY GOVERNMENT

श्री एस० एम० जोशी (पूना) : दिसम्बर की ११ तारीख को पश्चिम भारत में जो भूकम्प आया उससे सिर्फ महाराष्ट्र को ही धक्का नहीं लगा बल्कि पूरे भारत में उसको लेकर काफी चिन्ता पैदा हो गई है । जब वह खबर यहां आई तो हमारे गृह मंत्री वहां पर थे और वह भी वहां पहुंच गये । उनके वापिस आने पर हम कई लोग यहां से वहां गये । सौभाग्य से मेरे लायक दोस्त श्री नाथपाई और हमारे मित्र जो कि मिनिस्टर हैं श्री आनन्द राव चह्वाण वह भी वहां आये थे । हम लोगों नें वहां का दौरा किया और जो कुछ देखा उससे पता चला कि समाचारपत्रों में जो आता है उससे कई गुना ज्यादा वहां नुक्सान हुआ है । सौभाग्य एक बात का है कि वहां जो बांध है, बंधारा है उसकी जो मौलिक रचना है उसको अभी तक खतरा पैदा नहीं हुआ है—

श्री प्रकाशवीर शास्त्री (हापुड़) : महाराष्ट्र में ज्यादा पुण्यशाली लोग रहते हैं ।

श्री एस० एम० जोशी : इसलिये तो खतरा बार-बार आता है ।

दूसरी बात यह है कि वहां का जो पावर हाउस है जो कि भूमिगत है और वहां जो आठ जेनरेटर हैं वे बन्द तो हुए लेकिन कोई ऐसा नुकसान नहीं हुआ जिससे आगे चल कर बिजली न मिलनें की सम्भावना पैदा हो । यह इंजीनियर लोगों ने हमें बताया है । लेकिन जन-धन की बहुत ज्यादा हानि हुई है । करीब दो सौ आदमी मरे हैं । यह संख्या इससे ज्यादा भी हो सकती है । जो लोग बेघर हो गये हैं उनकी संख्या का अभी तक ठीक-ठीक अनुमान नहीं लगाया जा सका है । लेकिन मेरा अपना खयाल यह है कि डेढ़ लाख से ले कर दो लाख के करीब लोग बेघर हो गये हैं । कई गांव ऐसे हैं कि शब्दार्थ से चिराग हो गये हैं, जो मिट्टी के घर थे वे गिर गये हैं । दुख इस बात का है कि कोयनानगर जो कि रास्ते पर है उसका भी पता तब चला, जब एक पोस्ट एण्ड टेलीग्राफ डिपार्टमेंट के कर्मचारी नें कुशलता और सावधानी से काम किया । दूर-ध्वनि नहीं चलती अगर वह एक

[श्री एस० एम० जोशी]

मामूली जो तार है उसके साथ सम्पर्क जोड़ कर पूना में खबर न करता । मैं समझता हूं कि ऐसे लोगों की हमें कद्र करनी चाहिये और हकूमत से उसे उसके लिये पुरस्कार भी मिलना चाहिये ।

हमने वहां यह भी देखा कि लोग बहुत ज्यादा भयभीत थे । इसका कारण यह है कि 13 सितम्बर को इसी तरह का एक भूकम्प का झटका वहां अनुभव किया गया था । उस वक्त एक दरार सी पड़ गई थी लेकिन नुक्सान इतना नहीं हुआ था । कुछ घर गिर तो गये थे और तब भी कई लोगों नें कहा था कि हमारे लिये कुछ किया जाये । हमारे मित्र श्री आनन्द राव चह्वाण और वहां के उप-मुख्य मंत्री जो उसी इलाके से आते हैं उन्होंने उस वक्त वहां का दौरा किया था । एक नौजवान ने उनको यह बताया उस जगह जहां पर एक पहाड़ में दरार सी आ गई थी कि हमारी जान को खतरा मालूम होता है, हमारे लिये जीवन की शाश्वती नहीं है, इसलिये कुछ किया जाये । अफसोस इस बात का है कि जब हम लोग वहां गये, तो उन के पिता नें बताया कि जिस लड़के ने यह बात कही थी, वह अब जिन्दा नहीं है । उस लड़के को ऐसा सपना हुआ था कि उस के जीवन के लिये कोई खतरा पैदा हुआ है ।

वहां पर जो इंजीनियर साहब हैं, मैं उन को भी धन्यवाद देना चाहता हूं । वहां जो भूमिगत पावर हाउस है, वहां जाने की किसी की हिम्मत नहीं हो रही थी, लेकिन श्री मूर्ति और मानें साहब वहां चले गये और उन्होंने दूसरे लोगों को भी कहा कि उन को वहां जाना चाहिये । बड़ी बहादुरी के साथ वे चले गये और उन्होंने वहां के जेनीरेटर को शुरू किया । मैं ऐसे सब लोगों को धन्यवाद देना चाहता हूं, जिन्होंनें बहादुरी का काम किया, देश के लिये बड़ा अच्छा काम किया ।

वहां के लोग अभी भी भयभीत हैं । वहां पर दो सरकारी नौकर मुझे मिले । एक ने मुझे पूछा कि हम को क्या करना चाहिये, हुकूमत से यह आदेश आया है कि हमें नौकरी पर जाना चाहिये । मैंने उस को जानें के लिये कहा । उसने कहा कि मेरी पत्नी जानें नहीं देती है । मैंनें जा कर उसकी बीवी को भी समझाने की कोशिश की । जब मैंनें उस को दूसरे लोगों की बहादुरी और साहस के उदाहरण दिये, तो वह भी समझ गई और उसने कहा कि उस के पति को जाना चाहिये । ऐसे जिन लोगों ने अच्छे काम किये हैं, हमें उन को पुरस्कृत करना चाहिये, उन को धन्यवाद देना चाहिये । वहां के इंजीनियरों ने बहुत अच्छा काम किया है ।

जब 13 सितम्बर का भूकम्प आया, तो उस वक्त उन को बताया गया कि फिर भूकम्प नहीं आयेगा, मगर 11 दिसम्बर को उस से भी ज्यादा ज़ोर का भूकम्प आया । अब उन लोगों को डर लगता है कि आगे क्या होगा, क्या इस के बाद भी कोई दुर्घटना होगी । कौन उन को बता सकता है कि नहीं होगी ? मेरा सुझाव यह है कि यहां के कुछ एक्सपर्ट लोग वहां जायें और वहां के लोगों को दिलासा दें कि आगे चल कर ऐसा भूकम्प आने का इमकान नहीं है । मैं जानता हूं कि वे खुदा नहीं हैं, वे नहीं कह सकते हैं कि आगे कुछ नहीं होगा, लेकिन अपने ज्ञान के कारण वे वहां के लोगों को आश्वस्त कर सकते हैं ।

इस के बाद प्रश्न यह है कि वहां के दुखी बेघर लोगों को हम कैसे सहायता पहुंचायें । सहायता दो किस्म की है : एक तात्कालिक और एक स्थायी । तात्कालिक सहायता तो पहुंचाई जा रही है और सब जगहों से उन के लिये अनाज आदि आवश्यक चीजें भेजी जा रही हैं । महाराष्ट्र सरकार भी यह काम कर रही है और आगे भी करेगी । लेकिन स्थायी सहायता बहुत महत्व की है और मैं समझता हूं कि वह महाराष्ट्र की हुकूमत की शक्ति के बाहर का काम है । जहां तक मैंने हिसाब लगाया है, उन लोगों के पुनर्वास के लिये

कम से कम दस करोड़ रुपये की जरूरत होगी। जब कभी ऐसा नैसर्गिक, कुदरती, हादसा हो, तो सम्बद्ध क्षेत्र के लोगों की सहायता करना केन्द्रीय हुकूमत का फ़र्ज होना चाहिये। राज्य सरकारें अकेली उस काम को नहीं कर सकती हैं।

मैं यह भी चाहता हूं कि जब हम उन बेचिराग गांवों का पुनर्वास करें तो वह कुछ कायदे के साथ होना चाहिये। हमारी हुकूमत आश्वासन देगी, लेकिन आश्वासन कभी-कभी पूरे नहीं होते हैं। जब कोई दुख का समय आता है, तो आदमी कहता है कि हम कुछ करेंगे, लेकिन करता नहीं है। मुझे अनुभव है कि जब पूना में पंचशेट की दुर्घटना हुई, तो केन्द्रीय गृह मंत्री ने, जो उस समय वहां के चीफ मिनिस्टर थे, कहा था कि हम पुनर्वास के लिये योजना बनायेंगे और उस समय एक करोड़ रुपये का कमिटमेंट किया गया था। लेकिन बाद में वहां की हुकूमत एक रास्ता निकाल कर उस कमिटमेंट से हट गई। अब उस पर हमारा भरोसा नहीं है। अगर केन्द्रीय हुकूमत सहायता नहीं करती है, तो यह काम नहीं होने वाला है।

हम लोगों को दूसरों के अनुभव से भी सीखना चाहिये। मैंने ताशकंद के बारे में एक फिल्म देखी थी। वहां पर एक नया ताशकंद बनाने का प्लान बनाया गया था। जब कोयनानगर के क्षेत्र में नये गांव बसाने हैं, तो उन का ले आउट तैयार करना चाहिये। इस काम के लिये यहां के इंजीनियर्स और वहां के शासन के इंजीनियर्स की एक कमेटी बनाई जाये। केन्द्रीय हुकूमत की तरफ से इस सम्बन्ध में वित्तीय सहायता दी जाये। इस प्रकार एक ऐसी स्थिति बनाई जाये कि विध्वंस से एक अच्छा काम हो जाये। अगर अब वहां पर नमूनेदार गांव बसाने की व्यवस्था की जाये, तो इस दुखद घटना से भी कोई अच्छी बात निकल सकती है।

अन्त में मैं यह कहूंगा कि केन्द्रीय हुकूमत को यह घोषणा करके वहां के लोगों को दिलासा देना चाहिये कि उन को सहायता देनें में वह ज्यादा हाथ बंटायेगी और उस सहायता में बड़ा हिस्सा उस का होगा।

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से सदन के समक्ष एक सुझाव रखना चाहता हूं। जब जब देश पर इस प्रकार के प्राकृतिक कोप आये हैं, तब-तब देश के सभी भागों की जनता नें पीड़ित लोगों की सहायता के लिये पूरा योगदान दिया है। आपको याद होगा कि जब क्वेटा और बिहार में भूकम्प आये थे, तो देश के अन्य भागों के साथ मिल कर महाराष्ट्र के लोगों नें अपनी भरपूर शक्ति से सहायता की थी। अभी पीछे जब हमारे देश पर आक्रमण हुआ था, तो संसद् की ओर से सारे देश को अपील की गई थी कि वे प्रधान मंत्री के कोष को भरे। मेरा सुझाव है कि इस अवसर पर भी संसद् की ओर से देश के नाम अपील की जाये कि इस प्राकृतिक कोप से पीड़ित लोगों की सहायता की जाये।

श्री तुलसीदास जाधव (बारामती) : सभापति महोदय, कोयना से पाटन तक के तीन-चार सौ मील के क्षेत्र में भूकम्प का जो इतना बड़ा धक्का आया, उस का ज्यादा असर कोयनानगर के इर्द-गिर्द हुआ। इस भूकम्प से जो नुक्सान हुआ है, उस की अधिकृत इन्फर्मेशन तो मेरे पास नहीं है। न्यूज पेपर की इन्फर्मेशन के अनुसार उस क्षेत्र में पांच सौ गांव बेचिराग हो गये हैं। शायद और भी होंगे, जहां हम बरसात की वजह से नहीं जा सकते हैं। सभापति महोदय, आप वहां से हो कर आये हैं और वहां की सारी स्थिति को जानते हैं। करहाट-पाटन तालुके में, जो कोयना नदी के किनारे है, सैंकड़ों गांव खत्म हो गये हैं। कोयना से पाटन तक जितने पुल थे, वे सब खत्म हो गये हैं। रत्नागिरि, सतारा, सांगली और शोलापुर इन डिस्ट्रिक्स में ज्यादा इस का असर हुआ है। कम से कम लगभग पन्द्रह बीस करोड़ तक का तो नुकसान हुआ है। 30 हज़ार मकान गिर गये हैं और 197 आदमी मरे हैं। 4 हजार

[श्री तुलसीदास जाधव]

तक लोग जख्मी हुए हैं। वहां के लोगों नें अपनी ताकत के अनुसार बहुत मदद की है। बालासर देसाई जो रेवेन्यू मिनिस्टर हैं, भागवत राव देसाई, कलेक्टर पद्मनाभन और वारवरकर इन सब लोगों को बहुत धन्यवाद है, सब के नाम तो मैं गिना नहीं सकता, इन लोगों ने बहुत काम किया है। सतारा केन्द्र के जो स्टेट ट्रांसपोर्ट के ड्राइवर और कंडक्टर हैं उन में से करीब 300 ड्राइवरो और कंडक्टरों ने बहुत भारी मदद की है। अखबारों से मालूम हुआ है कि करीब 50 हजार के उन का खर्च आया है। हो सकता है कि इससे भी ज्यादा खर्च आया हो। पैसे की बात नहीं है। वहां के लोगों के दुख और दर्द का सवाल इस समय है। 32 केन्द्र वहां खोले गये हैं जो कि बहुत ही कम हैं। और ज्यादा केन्द्र खोलनें की जरूरत है। वहां जो कोआपरेटिव शूगर फैक्ट्री है और उन की सोसायटी है उन्होंनें एक करोड़ रुपया दिया है। उन के चेयरमैन हैं बसंत राव पाटिल जो महाराष्ट्र प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष हैं उन्होंनें इस में लीडिंग पार्ट ले कर बड़ा अच्छा कार्य किया है।

लेकिन यह सब कुछ होनें के बाद हम को सेंट्रल गवर्नमेंट से यह कहना है कि वह इन की ओर विशेष रूप से ध्यान दे। मैं उन लोगों को धन्यवाद देता हूं, पार्लियामेंट की तरफ से भी और देश की तरफ से भी जिन्होंनें वहां मदद की है। आप भी वहां गये। श्री डी० आर० चह्वाण डिप्टी मिनिस्टर यहां हैं सेंटर के उन्होंने वहां सब देखा था और दो महीने के पहले ही उन्होंनें दिल्ली सरकार को इस भूकम्प के बारे में इत्तिला दी थी। वह अभी भी वहां गये हैं। यशवंत राव जी चह्वाण, उन का तो जन्म स्थान है वह। वह भी वहां पर गये हैं। वह भी वहां पर गये थे। काम का तकाजा होने से उन का दिल उधर था और शरीर इधर, यह भी हम जानते हैं। लेकिन इतना होते भी आज वह इसी दिल्ली सरकार के होम मिनिस्टर हैं और उन से हमारी रिक्वेस्ट है कि आप जरा जोर दे कर मोरार जी भाई से ज्यादा से ज्यादा मदद इस के लिये मांगें। यह कहा जायेगा कि वह वहां के एरिया के हैं लेकिन यह होते हुए भी आपका वहां के लिये मांगना फर्ज़ है। वह भी किस हिसाब से मांगना है कि बरसात आने से पहले, मार्च से पहले रिहैबिलिटेशन हो जाना चाहिये। बिहार के भूकम्प के समय जैसी मदद बिहार में की गई थी वैसी ही मदद यहां भी करनें की ज़रूरत है। दिल्ली सरकार का फर्ज़ है कि इस समय पैसे की तरफ वह न देखे। जितना पैसा लगे उतना वहां देना चाहिये यह हमारी विनती है। पाकिस्तान के रिफ्यूजी आते हैं तो उन के रिहैबिलिटेशन के लिये करोड़ों रुपया खर्च करते हैं। ऐसे ही इन के लिये भी रिहैबिलिटेशन करने की ज़रूरत है।

मैं ज्यादा वक्त नहीं लूंगा। इतना ही कहना चाहता हूं कि इन लोगों के लिये महाराष्ट्र के लोगों ने तो ज्यादा से ज्यादा काम किया है और वह कर भी रहे हैं। लेकिन भूकम्प के कारण वहां के लोगों की जो दुर्दशा हुई है उस को देखते हुए दिल्ली सरकार का फर्ज़ है कि जितना पैसा लगे उस के ऊपर जरा भी सोच-विचार किये बिना उतना पैसा वह दे। यही हमारी बार-बार विनती है।

SHRI NATH PAI (Rajapur) : I shall be very brief, because you, Sir, based on your personal experience, an unfortunate experience which we share together, have given the House already the gruesome details of this targedy that struck western India. Not only have we toured the area, but Shrimati Sharda Mukerjee also has toured the area extensively, and so, we shall not be depending on press reports but on our personal experience the details of which I shall not go into now. My approach remains what it was when I read the matter, when we first heard of this tragedy that had befallen Western Maharashtra. The tragedy is too big to strike any partisan note or to indulge in any apportionment of blame between Government's failure and the achievement of the opposition. I was very much dis-

tressed to see a report in national daily where I was completely misrepresented, because, I think, I was misunderstood.

In the midst of the ruins which surrounded us wherever we went—and I would like to bring to the notice of the House that the grimness and dimensions of the tragedy are for more than the most eloquent pen of our smartest journalist can convey to this House or to the country—three things were standing, and though our hearts were heavy with sorrow and sympathy for what had befallen our people, there was an element, even in the mist of sorrow, of pride in our hearts, and these three redeeming features, the three things which stood in the midst of those ruins were these. Firstly, the morale of the people. In spite of the tragedy that had befallen—every family in the vicinity had lost either relative or a member of the family or suffered heavy loss—the morale of the people remained very high. Not one person wanted to desert his hearth, home or post of duty. They wanted to continue to serve there, and this becomes matter of pride when we remember that for three months this area has been suffering tremours of one intensity or other

The other thing that stands out in the mist of the ruins was the unity of our people. Here we make appeals for integrity and unity, but there we were seeing moving demonstration of the unity of our people. Food, aid, clothes and medicines were coming from all over the country. Differences were forgotten, and what Satara, Karar, Ratnagiri and Koyna was suffering was felt by the rest of the people as their suffering. It was a moving sight. We noticed that food was cooked 300 miles away and sent. When I was going down the ghats, I was moved to see women working overnight to make chappatis to send to the affected people. This was something hopeful.

And the third thing that stood in the midst of the collapse everywhere was a Koyna, a symbol that India has arrived as a modernisation. The epicentre of the earthquake was only a few kilometres from the dam, but the dam had defied it. I, as an Indian, though I was having the pain of the suffering which I was sharing with my fellow countrymen, was having this element of pride. There stood Koyna, a tribute to the skill of our engineers, those who had toiled and sweated there. This is perhaps something of which the whole of the Indian nation should be proud.

Imagination boggles at the thought of what would have been the dimension of the tragedy that would have befallen not only Karar, Sangli, etc., but a large number of townships and villages in Karnatak and Andhra, had the dam collapsed. What an achievement it is.

Having said that, I wish to make some suggestions. It is not Maharashtra only. My friends from Bengal and Orissa will be talking about the floods there. This country did not know that 800 Oriyas had lost their lives; that our fellow countrymen's bodies were being eaten by dogs and vultures we did not know for two months. Nature is often cruel in its blow against man, and then we find ourselves in this country completely helpless. That was the story of Bengal, that was the story of Orissa, and now that is the story of Western Maharashtra. I would like that Mr. Chavan tries to press into service his vast experience and the resources of this Government. The division of work must be like this. The State Government, when struck with a natural calamity, must be given the task of organising relief, but the aid, the resources, the material, must be made available by the Union Government. It is the only way that the country can grow. Today the tragedy is of Maharashtra, yesterday it was Orissa, the day before it was Bengal, but as Shri Prakash Vir Shastri rightly pointed out, in the hour of tragedy the response must be not only of the people of Maharashtra, Bengal or

[Shri Nath Pai]

Orissa, but of the whole nation. Therefore, the Union Government must ask the State Government to use its machinery, but the aid must go from the Union Government. Twelve to 15 thousand houses have collapsed, and it is estimated that the damage would be Rs. 10 to Rs. 15 crores. The Government are trying to under-estimate the damage for obvious reasons because it is they who are supposed to foot the bill. I think this time Mr. Chavan will resist this kind of tendency on the part of the bureaucracy and the State Government to underestimate the damage because then they can come and say,—I am not ridiculing them—"We have done all that could have been done." Let the Rehabilitation Ministry's resources be pressed into service; let the apparatus of the Defence Ministry be pressed into service and let the course of rehabilitation not be on the pattern, namely, where there was a hut we built another hut. Where a hut has collapsed let not another hut be substituted. Let us learn from the experience of what had happened in London. London was burnt by fire and Christopher Wren came and then a new London was built. Let us take this challenge from Nature and try to take a lesson from it, try to create a new Satara, a new Koynanagar. Let not those people who have suffered from the ravages of Nature and man be again condemned to live in the same old hovels, huts without sunlight. That is onething.

Then, I hope the aid from the Centre will be massive. I am not claiming one amount or another amount. But it must be massive, adequate and enough, not only to give a hut for a hut, tile for a tile, but the hope of a new life for the people who have suffered, and the Union Government must not be miserly or stingy.

Finally, after having made this appeal, I still harbour—I give credit where it was due—and I have still this fear in my mind, which is a haunting suspicion and doubt still gnawing at my mind. I wrote a letter to Mr. Chavan. I never said that all the personnel ought to have been evacuated from that area. What I said, when I raised the issue when you came from Koyna, was perhaps the non-essential personnel could be evacuated. After the warning of three months, after the warning of so many tremors, and after the massive earthquake of 13th September, on the basis of which Mr. D. R. Chavan wrote a letter, perhops we could have activised the machinery and perhaps the bureaucracy could have been alerted, and they could have then acted. I did not want the engineers to be evacuated. How could they leave their post, when death was everywhere? We cannot run away from the challenge of life and death. But the non-essential personnel who were mainly the people who died there could have been saved. Mr. Chavan needs to give a reply; what was the action taken by the Government of India, after Mr. Chavan wrote a letter to the Union Government mentioning the earthquake and the intensity of the stroke of 13th September?

These are some of my observations. I hope he wil take them in the spirit in which I have made them and the Government of India will respond in the manner I make them. May I now endorse the plea that Shri Prakash Vir Shastri made? Let a beginning be made. I am a little constrained; he wanted me to endorse it.

मैं आपकी जो मांग थी और प्रार्थना थी, उस को दोहरा रहा हूं । इस लिये नहीं कि मैं महाराष्ट्र में पैदा हुआ हूं, बल्कि इस लिये कि मुझे आपकी बात में गुण लगता है । आपने जो प्रस्ताव संसद के सामनें रखा है कि पूरे देश को इस में शामिल करना चाहिये, यह बहुत उचित है । यह ठीक है कि यह जो आपत्ति आई है, उस में महाराष्ट्र शिकार बन गया है, मगर यह संकट पूरे देश का है । यदि इस दृष्टि से हम देखें तो आगे के लिये हम कुछ मार्गदर्शन दे सकेंगे ।

SHRIMATI SHARDA MUKERJEE (Ratnagiri) : Mr. Chairman, Sir, I know you are short of time and I shall not take up much time of the House. Shri Nath Pai, before me, has described most vividly his experiences to his visit to Ratnigiri and to Satara. The strange thing is, when the first news of the Koynanagar earthquake came here, we did not know the extensive area over which the earthquake had spread, because most of the villages which have been affected badly are in the mountains where there are not sufficient roads from which news does not come. Now, I would like to suggest here to the Government that admittedly the Koyna Dam and Koynanagar require a considerable amount of help, but also that when such help is given, they must see that adequate help is also given to those villages where perhaps the loss of life has not been so great, because the houses were of mud whereas the houses in Koynanagar were made of stone and so on. So, when mud crumbles, it does not kill the people. The loss of life in Koynanagar was far higher than the loss of life in the villages. But what we must remember is this. When the people in the villages have lived there for generations and have to live there for some more generations, it is the confidence of these people that we must safeguard, and therefore, help must be given to them in adequate quantity. Many years ago I was in Quetta and for months I lived while these tremors were going on. When I reached the areas of Ratnagiri district three days after the first shock, the tremors were going on every two hours and we heard the sound as if a bomb was exploding. But the people are not afraid. The people have stayed there because their lands, their souls are there and they belong to that place. Of course, in Quetta we had to live there because of work, though we did not belong to that place.

The people of those areas are going to live there. All that they need from us is not merely timely sympathy or timely aid, but long-term aid and a regeneration of confidence. When I went there, I found that no press people had been able to reach there. Some of them care with me. My suggestion is, first of all aid in sufficient quantities should go to the villages of Satara and Ratnagiri. Secondly, the aid we are going to give must be distributed in a proper manner. Already I understand that the Commissioner and others have sent the requirements of the people. It is no use my going into details over that.

Here I must express my deep appreciation of the very good work both the army and the engineers are doing in Koynanagar. When the whole township is absolutely deserted, they are living in tents there. This is really a tremendous thing. I realise that it is not possible that massive aid must come from the Central Government. A large part of the responsibility may have to be taken by the people of India. Mr. Nath Pai said Rs. 15 crores. That is possible. In one district alone, as I could assess it, the requirement was Rs. 4 to Rs. 5 crores. In Satara district, it would be much more. Whether the Central Government can give this much money, I am not sure. It is for the Home Minister to say. Only today the Finance Minister has come to this House with some supplementary demands. I think the people of India must be made aware of the situation and provided with a channel whereby they can also subscribe to the fund for rehabilitating the people in the affected areas.

श्री देवराव पाटिल (यवतमाल) : सभापति महोदय, मुझे भी इस के सम्बन्ध में कुछ कहना है ।

सभापति महोदय : मुझे बताया गया है कि वह बहस आधे घंटे की है ।

श्री श्रीचन्द गोयल (चण्डीगढ़) : ऐसी स्थिति में दूसरा विवाद नहीं लिया जा सकेगा ।

सभापति महोदय : अगर दूसरा विवाद नहीं लिया जायगा, तो मैं आपको यह आश्वासन नहीं दे सकता कि आइन्दा—कल या परसों—

[सभापति महोदय]

वह विवाद आ सकेगा । अगर वह खतरा आप मोल लेने के लिये तैयार हैं, तब तो ठीक है ।

श्री कंवर लाल गुप्त (दिल्ली सदर) : हमारी पार्टी को भी 5-10 मिनट दीजिए । कांग्रेस की तरफ से तो लोग बोल चुके हैं, अब हम को मौका दीजिए ।

श्री देवराव पाटिल : जिन्होंने नोटिस दिया है, उन के लिये तो दो-दो मिनट दीजिए ।

श्री श्रीचन्द गोयल : सभापति महोदय, पिछले 150 वर्षों के अन्दर इस तीव्र गति से भूकम्प अपने देश में इस के पूर्व नहीं आये थे . . . .

एक माननीय सदस्य: आपको इतिहास मालूम नहीं है, 1934 में बिहार में आया था ।

श्री श्रीचन्द गोयल : कोई बात नहीं है, मुझे अपनी राय रखनें दीजिये जहां तक गति का सवाल है, मुझे बिहार का मालूम है, कोयटा का मालूम है, असम का मालूम है, कलकत्ता का मालूम है, गति की दृष्टि से यह सब से तीव्र था ।

मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि इस भीषण भूकम्प से जो हानि जानोमाल की हुई है उस के जो आंकड़े दिये गये हैं, मैं उन में नहीं जाना चाहता, लेकिन एक बात सामने आई है कि उस के पूर्व जो यह धारणा थी, कल्पना थी कि दक्षिण की जो भूमि है वह इन भूकम्पों से बिलकुल फ्री है, वहां भूकम्प नहीं आ सकते—यह धारणा आज गलत सिद्ध हुई है, वहां भी भूकम्प आ सकते हैं, यह नई बात आज जूलोजिस्ट्स के सामने आई है और मैं समझता हूं कि आज इस बात की आवश्यकता है कि जो दूसरे देशों के विशेषज्ञ हैं, चाहे वे जापान के हैं, जर्मनी के हैं, इटली के हैं, इन को ले कर तथा हमारे देश के भी प्रमुख जूलोजिस्टों को लेकर एक समिति बनाई जाये, जो इस बात की खोज करे कि आगे भी कोई इस प्रकार के भूकम्प आ सकते हैं या नहीं ।

विशेष कर यह जो इतना बड़ा भारी डेम है इस डैम के सम्बन्ध में अभी इस प्रकार की धारणा है कि उस को कोई हानि नहीं हुई है परन्तु एक डैम की हानि अपने देश को कितनी हानि पहुंचा सकती है उस में गहराई में जाने की जरूरत है ।

सभापति महोदय, मैं इस बात को स्वीकार करता हूं कि इस प्रकार की विपत्ति, आपदा, देश के किसी भी कोने में क्यों न आये, उस के लिए हर एक देशवासी का परम् कर्त्तव्य बन जाता है कि विपत्तिग्रस्त और क्षतिग्रस्त लोगों की पूरे तौर पर और भरसक मदद करें । इसके लिए दिल्ली प्रशासन और दिल्ली का जो नगर निगम है उन्होंने उसमें सहायता देने का वचन दिया है । हमारी अपनी संसद् की तरफ़ से भी उस के लिए एक सहायता कोष इकट्ठा किया जा रहा है । मैं प्रधान मंत्री जी से भी इस बात की अपील करूंगा कि उन का जो सहायता कोष है उस में भी सारे देशवासियों से उस में चंदा देने का आग्रह करें । जैसा कि मेरे दोस्त श्री नाथपाई नें सुझाव दिया है जो वहां पर झोंपड़ियां थीं उन के स्थान पर अच्छे मकान बनाये जायें । जो लेबर कालोनी है जो वहां के रहने वाले हैं और जो बम्बई और पूना के लिए बिजली तैयार करते हैं उन की सब से अधिक हानि हुई है । उस का भी विचार करके उन के लिए अच्छे मकान बनाये जायें । वहां पर भूकम्प से जो हानि हुई है उस के लिए मैं अपनी ओर से, अपने दल की ओर से क्षतिग्रस्त लोगों को सहायता पहुंचानें का प्रयत्न करूंगा और मैं तमाम देशवासियों से भी इस काम में सहायता देनें की अपील करना चाहता हूं ।

श्री रामावतार शास्त्री (पटना) : सभापति महोदय, भारत की स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चात् पश्चिम भारत में हाल में आया हुआ भूकम्प

सब से बड़ा भूकम्प है। वैसे स्वतंत्रता के पूर्व बिहार में सबसे बड़ा भूकम्प आया था जिसकी जानकारी मैं समझता हूं आप में से ज्यादातर लोगों को होगी। उस समय हमारे देश के ऊपर अंग्रेजी सरकार का शासन था। बिहार के और देश के अन्य बड़े-बड़े नेता उन दिनों जेलों में बंद थे। जब बिहार में वह बड़ा भूकम्प आया तो उस समय अंग्रेजों ने उन तमाम नेताओं को जेलों से छोड़ दिया था। उस समय की भयंकर स्थिति को देखते हुए अंग्रेज़ों ने तमाम नेताओं को रिहा कर दिया था। मैं भी उस समय जेल में था। कोई 12-13 वर्ष की मेरी अवस्था थी। मैं अपने अनुभव से जानता हूं कि भूकम्प का कितना विनाशकारी असर होता है। बिहार पूरे तरीक़े से उस से आक्रान्त था और तब के प्राप्त अनुभव से मैं भली-भांति समझ सकता हूं कि हाल में पश्चिमी भारत में आये हुए भूकम्प ने वहां क्या प्रलय मचायी होगी और वहां के लोगों की क्या दुर्दशा हुई होगी। उस की भयंकरता मैं समझ सकता हूं। क्योंकि मुझे बिहार के उस भूकम्प का अनुभव है। इस स्थिति में हम सब भारतवासियों का यह परम् कर्तव्य है कि हम अपने तमाम मतभेदों को भुला कर वहां की जनता की हर संभव मदद करें। सब लोग अपने-अपने विचारों व मतभेदों आदि को थोड़ी देर के लिए भुला दें और समझें कि हम तमाम लोगों पर यह विपत्ति आई है, इस देश की 51 करोड़ जनता पर यह विपत्ति आई है और वैसा समझ कर हम ज्यादा से ज्यादा मदद करें। इस काम में मदद के लिए गैर सरकारी संस्थाओं को भी आगे बढ़ना होगा। यहां की सरकार और वहां की सरकार तो हर संभव सहायता देगी ही, लेकिन जैसा मैं नें कहा, सभी प्राइवेट संस्थाओं को भी इस काम में हाथ बंटाना होगा। यह बहुत बड़ा काम है और इस में बहुत पैसे की ज़रूरत है। हमारे दल के अध्यक्ष और इस सदन के माननीय सदस्य श्री डांगे ने तो यहां तक कहा है कि इस के लिए 25 करोड़ रुपये की आवश्यकता होगी। बहरहाल जितने भी रुपये की आवश्यकता हो उसे जुटाने में कोताही नहीं होनी चाहिए। क्या मैं ऐसा विश्वास करूं कि सरकार इस मौक़े पर आवश्यक धन की व्यवस्था करने में कोई कोताही नहीं करेगी ?

जैसा कि माननीय सदस्य श्री प्रकाशवीर शास्त्री ने सुझाव दिया है कि इस सदन् की ओर से देशवासियों को भूकम्प से पीड़ित व क्षतिग्रस्त लोगों की सहायता करने के लिए अपील करनी चाहिए तो सदन् को राष्ट्र के नाम अपील तो निकालनी ही चाहिए, लेकिन साथ ही मेरा उस में एक यह भी संशोधन है कि हम संसद् सदस्य जोकि यहां पर 700 से अधिक संख्या में हैं, हम लोग भी एक टोकैन के तौर पर एक दिन का अपना भत्ता सहायता कोष में दे दें तो उस का महत्व कम नहीं होगा और देशवासियों पर व जनता पर उसका एक अनुकूल मनोवैज्ञानिक असर पड़ेगा। और वहां की जनता को भी इस से भरोसा होगा कि पूरा देश उन के पीछे है क्योंकि संसद् के तमाम सदस्यगणों ने राष्ट्र के नाम सहायता करने की अपील निकाली है और उस के साथ ही संसद् सदस्यों ने स्वयं भी इस काम में धन से मदद की है। उन में विश्वास आयेगा, उन्हें राहत मिलेगी और कोई दिक्त नहीं होगी। उन्हें भरोसा हो जायगा कि उन का पुनर्वास होगा और सब तरह से मदद मिलेगी। सरकार भी उन्हें पूरी मदद देगी और देश की जनता भी पूरी-पूरी मदद उन को करेगी।

बिहार के बारे में मैं बतलाना चाहूंगा कि वहां पर बुरी आर्थिक हालत हो रही है। वहां बाढ़ आ गयी थी जिसने काफ़ी वहां पर तबाही मचायी। उसके लिए जो रिलीफ़ कमेटी है उस ने 50,000 रुपया सहायता कार्य करने के लिए भेजने का फैसला किया है। उसके अध्यक्ष आप जानते ही हैं कि हमारे श्री जयप्रकाश नारायण हैं। मैं निवेदन करना चाहूंगा कि हम सभी लोग अपने तमाम मतभेदों को भुला कर वहां की जनता को बचायें, उन को अपने विचार के मुताबिक ढालने की कोशिश हम बाद में करेंगे लेकिन अभी उन को इस विपत्ति से बाहर निकालें।

श्री शिव कुमार शास्त्री (अलीगढ़) : सभापति महोदय, मुझे इस सदन को सूचित करते हुए बड़ा हर्ष हो रहा है कि इस काम में आर्य समाज ने भी सहायता देने का निश्चय किया है और वह हर सहायता शीघ्र ही, देगा ।

श्री देवराव पाटिल (यवतमाल) : सभापति महोदय, पश्चिम भारत में हाल ही में आये भूकम्प के कारण महाराष्ट्र का कोयनानगर, जो एक बड़ी विद्युत् प्रोजैक्ट का केन्द्र था, बरबाद हो गया । लेकिन यह जो संकट वहां पर आया देवी आपदा आई तो वह उस क्षेत्र का ही नहीं रहता है बल्कि वह राष्ट्र का संकट माना जाता है और जाहिर है कि अगर उस संकट को हल करना है तो बड़ी हिम्मत के साथ और दृढ़ता के साथ सब को मिल कर काम करना है व सहायता कार्य में मिल कर हाथ बंटाना है । इसलिए इस विषय पर चर्चा उठाने का मैं नें प्रयत्न किया ।

आज आवश्यकता इस बात की है कि महाराष्ट्र क्षेत्र के इस भुकम्प के परिणाम पर समस्त देश की जनता व केन्द्रीय सरकार पूर्ण रूप से ध्यान दे और सभी मंत्रालयों से सहायता कार्य का प्रवाह तत्काल आरम्भ हो जाय जिससे भूकम्प पीड़ित जनता को कुछ राहत मिले । कुछ धैर्य प्राप्त हो और उसके सामने भविष्य का अंधकार हट जाए । यह विपदा एक क्षेत्र की नहीं पूरे राष्ट्र की है । इस का सामना भी हमें दृढ़ता तथा साहस के साथ ही करना पड़ेगा ।

दूसरी बात मैं यह कहना चाहता हूं कि केन्द्रीय सरकार की यह एक नीति हो गयी है कि वह ऐसे मामलों में यह कह दिया करती है कि वह तो राज्य का सवाल है और उसे सम्बन्धित राज्य ही हल करे तो उसे यह नीति त्यागनी होगी और इस को समूचे देश का सवाल मान कर हल करने का सभी को प्रयत्न करना होगा ।

वैसे हमारे महाराष्ट्र राज्य पर इस बार संकट की परम्परा सी हो गयी है । अब के वहां पर लगातार वर्षा होती रही है । दस दिन तक लगातार वर्षा हुई है और परिणामस्वरूप हमारे वहां अनाज को नुकसान हुआ । जहां भूकम्प आयाने और उस भयंकर तबाही की वहां इस बार की लगातार वर्षा उसने में और बढ़होतरी की । मैं आज ही अपनी कांस्टीटुएंसी से होकर आया हूं और मैं अपने साथ नमूने के लिए ज्वार के भुट्टे यहां पर लाया हूं । लगातार १० दिनों की वर्षा से विदर्भ में ज्वार की फसल को भारी नुकसान पहुंचा है । जहां तहां से फसल नष्ट होने के चिंताजनक समाचार अभी भी प्राप्त हो रहे हैं । इस वर्ष अच्छी समझी जाने वाली ज्वार की फसल को सब से ज्यादा धक्का पहुंचा है । ज्वार के खेत पानी की मार से न केवल चौपट हो गये हैं बल्कि भुट्टों में दानें काले पड़ने के अलावा उन में एक से डेढ़ इंच लम्बी कोम्प फूट आई है । भूकम्प और यह लगातार बारिश के रूप ने हमारे प्रदेश में दुहरी मार पड़ी है । अनुमान है कि इस लगातार वर्षा के कारण विदर्भ में 25 प्रतिशत फसल को नुकसान हुआ है । इस लिए जैसा मैंनें पहले कहा इस संकट को केवल महाराष्ट्र प्रदेश का समझ कर वहां की राज्य सरकार पर ही इसे हल करने का भर सोंप कर निश्चित नहीं हो जाना चाहिए । केन्द्रीय सरकार और अन्य सभी लोगों व गैर-सरकारी संस्थाओं को इस काम में आगे बढ़ कर हाथ बंटाना होगा ।

बिहार का जब संकट आया था और 70 लाख से ज्यादा मदद देने की जरूरत थी उस वक्त केन्द्रीय सरकार ने 50 प्रतिशत मदद सेंटर से दी थी । मुझे आशा है और विश्वास है कि केन्द्रीय सरकार और खासतौर पर हमारे वित्त मंत्री श्री मोरारजी देसाई अपनें कर्तव्य के प्रति सजग होंगे और ज्यादा से ज्यादा पैसे की मदद देंगे । करीब 20 करोड़ की मदद देने की आशा है । बाक़ी मैं पुनः इस बात पर ओर देना चाहूंगा कि वहां के बारे में होनें वाले नुकसान के बारे में पेपर्स में जो इनको इनफोरमेशन आती है वह गलत इनफोर-

मेशान है और दरअसल बहुत अधिक नुकसान हुआ है। इसलिए मैं सदन से प्रार्थना करता हूं और पुनः अपील करता हूं कि यह कोई एक क्षेत्र विशेष का सवाल नहीं समझा जाना चाहिए बल्कि यह एक समूचे राष्ट्र का सवाल है और इसी दृष्टि से हम नें इस पर यह चर्चा चलाई है।

श्री रणधीर सिंह (रोहतक) : चेयरमैन साहब, मुझे केवल एक मिनट का समय आप दें। मुझे अपने होम मिनिस्टर से एक बात निवेदन करनी है।..

सभापति महोदय : बहुत संक्षेप में कह डालिये।

श्री रणधीर सिंह : सभापति महोदय, मुझे उन पीड़ित और क्षतिग्रस्त भाइयों से बड़ी हमदर्दी है। हमारे इन मरहठे भाइयों का, शिवा जी के इन वंशजों का हमारे देश पर पड़ा अहसान है। शिवाजी की औलाद का बड़ा भारी ऐहसान है हम पर और हम उस एहसान का बदला उतारेंगे। आप नैशनल फंड बनाइये और उसमें आप हरियाणा को भी जोड़िए।

नाथपाई जी ने कहा है कि जो काजिज़ हैं उनका आप पता लगाइयें। जिस जगह से मैं आता हूं उस जगह पर पिछले चार साल से लगातार एक-एक दिन में छः-छः जलजले आते हैं। सोनीपत जगह का नाम है। वहां से मैं खुद आता हूं। मेरे खुद के मकान में दरार आई हुई हैं। वहां की एक लाख की आबादी है। पचास परसेंट वहां मकान ऐसे हैं जिन में दरार आ गई हैं। कुओं का पानी सूख गया है, नलकूपों में पानी सूख गया है। यह तीस मील का इलाका है। कहीं ऐसा न हो कि जैसे कोयना के लिए हम मातम मना रहे हैं वैसे सोनीपत के लिये भी एक हफ्ते या दो हफ्तों में खड़े हो कर मातम मनायें। काजिज़ को आप डिटैक्ट करें। आपकी एक्सपर्ट टीम सोनीपत जाए।

महाराष्ट्र पर जो दुख आया है उस में हम भी शामिल हैं। शास्त्री जी की जो प्रोपोजल है उससे मैं सहमत हूं। उसका हमें पालन करना चाहिये। एम० पीज० का जो शेयर है वह हम भी देने को तैयार हैं। इस में हम सब साथ हैं।

THE MINISTER OF HOME AFFAIRS (Shri Y. B. Chavan) : Mr. Chairman, Sir, in this debate I do not think I can be as objective as I should be because there is a lot of subjective element involved in it. I entirely share the feelings that you expressed in this matter. I would certainly like to give some information but I would say that **this is not the last word of the information** because I have found from the State Government that they are still compiling some information as information from places which were not very easily approachable is still coming in at the State level. Most of the information is coming at the district level but it is taking some time to reach here.

Sir, what you said was very much right because there is a large number of casualties. I thought I should share with the House the confirmed information that I have got so far. As far as deaths are concerned, in Satara District there were 150 deaths, in Ratnagiri District the information so far confirmed is about 9, and in Sangli District it is one. About persons injured the information is that in Satara District the number is 3,500, and in Ratnagiri District it is 210. About houses damaged and collapsed, in Satara District 20,000 houses were damaged or collapsed, in Ratnagiri District 3,500 houses were completely damaged and 4,500 partially damaged and in Sangli District about 400 houses were damaged or collapsed. Besides this, damage to public property, such as, roads, bridges and institutions, is also there. The number of people affected is slightly over 2 lakhs of people. What you said is right.

About damage in terms of money, it is a very controversial matter. I have received some calculation about it from the State Government but I am not going to mention it because it is still very doubtful. But there is no doubt that it is likely to run into

[Shri Y. B. Chavan]

crores of rupees. They have said that it is about Rs. 7 crores, but I am myself not prepared to believe in it, because possibly these calculations are made in terms.... (Interruption)

SHRI NATH PAI: You do not believe in it because you think it is much higher.

SHRI Y. B. CHAVAN: It is likely to be much higher than that. I do not believe it because it is not likely to be less but it is likely to be more. Therefore I am not mentioning any figure. There is nothing final about it.

As you very rightly said, there are two aspects of the problem. One is the rehabilitation problem and the other is the technical examination. The damage that is already done is certainly incalculable. But the fear in the minds of the people of a potential danger is something also very incalculable because people still think whether there is danger to the dam. It is very difficult to rid the people completely of fear because the people are living there and they know what the consequences will be if anything unexpected happens. Therefore the most important and urgent matter is to undertake a technical examination of it and make a proper assessment of what is the danger there.

Then, this news about the fissure was conveyed to us here by both the Deputy Minister, Shri D. R. Chavan, and the Government of Maharashtra who gave us some information. Only the day before yesterday there was a conference of expert geologists and other people—a very large conference of nearly 60 to 100 experts gathered here and a team has gone to Koyna Nagar only yesterday. The Irrigation Minister, Dr. K. L. Rao, has himself led the team and he is coming back sometime this evening. Probably, we will know more about it tomorrow. That is one important thing that will have to be undertaken, that is, technical examination to see what is the potential danger in future and what steps will have to be taken to prevent it. This is one aspect of it.

The other aspect is the rehabilitation problem. The problem is a very serious one. I mentioned some of the figures, but it is not the number alone but also the area involved is very big because three districts are involved, Ratnagiri, Sitara and Sangli.

AN HON. MEMBER: Even Sholapur and Kolahpur.

SHRI Y. B. CHAVAN: Yes, partly. There are certain isolated instances at other places also. But it is concentrated in these three districts. This question requires a proper planning. I had some discussions with the Chief Minister who was here to discuss the matter with the Irrigation Minister and the experts. He also had some discussion with the Deputy Prime Minister. The Deputy Prime Minister has promised him to do his utmost in this matter. This much I can say because it is very difficult for me to say how many crores of rupees he will give and what proportion he will give. It is not right, at this stage, to talk about it. I have no doubt that the Government of India will not hesitate to take this responsibility, not only in terms of financial share but share responsibility in other matters as well. It has already started doing many things about it.

The Food and Agriculture Ministry has already sent 2,000 tonnes of grain free. They have also agreed to send about 3,000 tonnes of corrugated sheets because that is a much more important requirement today. We found there—you must also have seen it—that all the brick and mortar houses had collapsed while even in Koyna Nagar corrugated sheet sheds had survived the stock. It is a very strange thing. But it is there. So, probably, we will have to think in terms of providing immediate housing with the help of corrugated sheets.

Then, the hon. Member, Shri Nath Pai and you also, Sir, raised a very important point of having some sort of a plan for permanent rehabilitation. I agree wtih this idea. But, at the same time, I do not want to ignore

the urgency of the matter. Before the monsoons start, not the regular monsoons but some sort of irregular rains which reach Maharashtra sometime in the later part of April, we will have to see that every family which is in distress today must get some roof over their head. That is, really speaking, the most urgent thing. So, this planning and urgency will have to be coordinated. How best it can be done is a question which will have to be gone into.

Sir, you mentioned about Poona and you know that with a view to have some sort of a new Pona, we passed a legislation in Bombay Assembly. But later on, the leaders of Poona, the Government of Maharashtra, decided to get away from this Act.

MR. CHAIRMAN : That is not an excuse.

SHRI Y. B. CHAVAN: I was myself very sad about it when I heard it. But this is the urgency of the needs of the people. When there is suffering of the people, sometimes we ourselves are also affected. I agree that some idea of planning will have to be introduced. But this also will have to be kept in view in terms of the urgency of the matter.

I share what Mr. Nath Pai has said about the distress of the people. That some of the best qualities were shown by some of the Government employees and the people at large is something which is very heartening to us as a nation. It is not because I happen to come from the same area that I give compliments to the people there. It is a pculiar feature of the Indian people because we are not differtnt from people in other parts of the country.

SHRI SHRI CHAND GOEL: The same thing happened in Punjab when Pakistan committed an aggression.

SHRI Y. B. CHAVAN. Yes. It is something very heartening to see even during difficult times the way the other people went to help the people in distress. I reached that place by about 11 O'Clock. This thing happend at 4-20 A.M. or so and I rushed there and I reached there by about 11 O'Clock. I must say, even within 7 hours or so, when I reached there, I saw truck-loads of food, chaptis, rushing there, coming from places 50 to 60 miles away from Koyna Nagar. Doctors were rushing there; the NCC boys had already reached and started the work. This was something which was very admirable. The spirit of the people is something which must be encouraged, and this can be encouraged by the nation only by sharing their difficulties, by running to their help. I am glad that many members who spoke on this have expressed this sentiment. I can only assure that the Government of India fully shares the feelings and suggestions that have been made. As one who represents that area, I will certainly try to do my part in this matter.

20 hrs.

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : सभापति महोदय, आप की आज्ञा से मैं यह सुझाव रखना चाहता हूं—मैं समझता हूं कि सभी माननीय सदस्य इससे सहमत होंगे—कि उस क्षेत्र के पीड़ित लोगों की सहायता के लिए इस संसद् की ओर से देश के नाम एक सामूहिक अपील की जाय।

SHRI RANDHIR SINGH: We all agree.

MR. CHAIRMAN : Mr. Ranga he has made a suggestion that an appeal from this House should go for the relief and assistance of the affected people in Koyna.

SHRI RANGA (Srikakulam) : That would be a kind of precedent. I am not opposed to it. But in that case, we will be doing it every time. If Government is agreeable, then we can do it.

सभापति महोदय : मैं समझता हूं कि सब दलों के लीडर पहले इस बारे में आपस में विचार करें।